



ଓଡ଼ାନ

ପ୍ରିଲିମ୍ସ ଲାଲା (ସ୍ଟେଟିକ)

ପ୍ରିଲିମ୍ସ 2025

ଅର୍ଥବ୍ୟବସ୍ଥା



କିଳକ ଏବଂ କୌମ୍ପିହେନ୍ସିବ ରିବීଜନ ସୀରୀଜ

विषय सूची

1. व्यष्टि अर्थशास्त्र	1	
● परिचय	1	
● आर्थिक गतिविधियाँ	1	
● उपभोक्ता व्यवहार का सिद्धांत	1	
● माँग वक्र	1	
2. राष्ट्रीय आय लेखांकन	7	
● परिचय	7	
● समष्टि अर्थशास्त्र की कुछ आधारभूत सिद्धांत	7	
● भौतिक पूँजी (Physical Capital)	7	
3. मुद्रा और बैंकिंग	15	
● मुद्रा की माँग और आपूर्ति	18	
● भारत में बैंक	20	
● बैंकिंग प्रणाली द्वारा मुद्रा का सृजन	24	
● गैर-निष्पादित परिसंपरियाँ (NPA)	26	
● विशेष उल्लेख खाते (SMA)	27	
● ऋण खाता वर्गीकरण	27	
4. मौद्रिक नीति और मुद्रास्फीति	29	
● मौद्रिक नीति	29	
● मौद्रिक नीति समिति	29	
● मौद्रिक नीति के उपकरण	30	
● बाजार परिचालन	31	
● मौद्रिक नीति के गुणात्मक उपकरण	32	
● वर्तमान भारत में मौद्रिक नीति	33	
● मौद्रिक नीति स्वरूप	33	
● मौद्रिक नीति संचरण	33	
● मुद्रास्फीति	34	
● मुद्रास्फीति से निपटने के उपाय	38	
5. सरकारी बजट और राजकोषीय नीति	40	
● सरकारी बजट	40	
● बजट खातों का वर्गीकरण	40	
● सरकारी बजट के प्रमुख उद्देश्य	41	
● राजस्व प्राप्तियाँ	41	
● पूँजीगत प्राप्तियाँ	41	
● सरकारी व्यय	42	
● बजट के प्रकार	43	
● राजकोषीय नीति	44	
● कराधान प्रणाली (Taxation System):	45	
● कर चोरी और कर से बचाव	49	
● कर सुधार: समितियाँ और सिफारिशें	50	
● राजकोषीय उत्तरदायित्व और बजट प्रबंधन अधिनियम (FRBM) तथा अर्थोपाय अग्रिम (WMA)	51	
● भारत में सार्वजनिक ऋण	52	
● भारत का बाह्य एवं सामान्य सरकारी ऋण अवलोकन (वित्त वर्ष 2024)	53	
6. भुगतान संतुलन, विदेशी मुद्रा और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थान	56	
● खुली अर्थव्यवस्था (Open Economy)	56	
● भुगतान संतुलन (BOP)	56	
● भारत में प्रेषण (Remittances Into India)	57	
● चालू खाता शेष (CAB)	57	
● पूँजी खाता	58	
● चालू और पूँजी खातों का सारांश	58	
● चालू और पूँजी खाता परिवर्तनीयता	59	
● त्रुटियाँ और लोप	59	
● मुद्रा और बाह्य क्षेत्र	60	
● विदेशी ऋण	60	
● मुद्रा संकट	60	
● विदेशी विनिमय दर	60	
● NEER और REER	61	
● विदेशी मुद्रा विनिमय, मुद्रा विनिमय और ब्याज दर विनिमय	61	
● विदेशी निवेश के तरीके	62	
● व्यापार समझौता	62	
● विदेश व्यापार के लिए सरकारी योजनाएँ	63	
● अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएँ	63	

● विश्व बैंक समूह.....	64	● भारत में भूमि सुधार.....	111
● अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (International Monetary Fund-IMF)	64	● भारत में कृषि संबद्ध क्षेत्र	111
● विश्व व्यापार संगठन (World Trade Organization- WTO).....	66		
● IPR, वैश्विक संस्थान और तंत्र तथा भारत का IPR ढाँचा.....	70		
● महत्वपूर्ण बहुपक्षीय संगठन	73		
● महत्वपूर्ण संगठन और भारत में वित्तपोषित प्रमुख परियोजनाएँ.....	75		
7. वित्तीय बाजार	77	9. उद्योग, विनिर्माण और बुनियादी ढाँचा	113
● मुद्रा बाजार (Money Market).....	77	● FY24 में औद्योगिक विकास और विनिर्माण क्षेत्र का प्रदर्शन	113
● मुद्रा बाजार के साधन	77	● विनिर्माण को बढ़ावा देने के लिए	
● पूँजी बाजार (Capital Market):.....	78	भवन विनियमों की पुनर्कल्पना [आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24].....	117
● ऋण बाजार के प्रमुख साधन (Debt Market Instrument)	79	● एक जिला एक उत्पाद (ओडीओपी) पहल [आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24].....	118
● डेरिवेटिव (Derivatives).....	82	● चाइना प्लस वन रणनीति: भारत के लिए अवसर और चुनौतियाँ [आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24].....	118
● कमोडिटी एक्सचेंज (MCX, NCDEX आदि)	83	● राष्ट्रीय निवेश और विनिर्माण क्षेत्र (NIMZs)	
● एफबीआईएल और एफआईएमएमडीए	86	और विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZs)	122
● विभिन्न प्रकार की निधियाँ	86	● बुनियादी ढाँचे का वित्तपोषण	125
● जमा रसीदें (Depository Receipts).....	88	● क्षेत्रवार मुख्य बिंदु	126
● विदेशी निवेश के प्रकार	88		
● FDI के प्रमुख साधन	89		
● भारत में शॉर्ट सेलिंग और लॉन्च सेलिंग.....	91		
● भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (SEBI)	91		
● SEBI का अधिदेश	91		
8. भारतीय अर्थव्यवस्था की पृष्ठभूमि	94	10. उदारीकरण, निजीकरण और वैधीकरण	132
● पृष्ठभूमि.....	94	● आर्थिक संकट की पृष्ठभूमि	132
● भारत की पंचवर्षीय योजनाओं का सारांश	95	● प्रतिक्रिया: नई आर्थिक नीति (NEP)	132
● भारत में कृषि विकास	95	● वैधीकरण	133
● भारतीय कृषि के हालिया परिवृश्य	96	● सेवा क्षेत्र के प्रदर्शन का सिंहावलोकन	135
● प्रमुख फसलें और फसल प्रतिरूप	96	● सेवा क्षेत्र में व्यापार	135
● बागवानी	98	● सेवा क्षेत्र की गतिविधि के लिए वित्तपोषण स्रोत	135
● भारत में बीज क्षेत्र	99	● क्षेत्रवार अवलोकन	136
● सिंचाई	100		
● उर्वरक	102		
● कृषि वित्त/ऋण	104		
● भारत में फसल बीमा.....	105		
● भारतीय कृषि नीति में प्रमुख स्स्थाएँ और उनकी रूपरेखा.....	106		
● खाद्यान वितरण	106		
● कृषि बाजार	107		
● न्यूनतम समर्थन मूल्य.....	107		
● मूल्य को प्रभावित करने वाले कारक:			
भारत में चावल उत्पादन के विशेष संदर्भ में	110		
11. मानव पूँजी निर्माण, ग्रामीण विकास	142		
● मानव पूँजी क्या है	142		
● भारत में मानव पूँजी निर्माण	143		
● मानव पूँजी: विविध तथ्य.....	145		
● केयर इकोनॉमी की बढ़ती आवश्यकता.....	147		
● केयर इकोनॉमी का आर्थिक योगदान	147		
● बेरोजगारी	148		
● रोजगार: आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 संबंधी परिवृश्य	149		
● निष्कर्ष और आगे की राह	152		
● गरीबी	153		
● प्रमुख समितियाँ और उनके दृष्टिकोण.....	156		
● गरीबी उन्मूलन योजनाएँ (2023-24).....	157		

परिचय

व्यष्टि अर्थशास्त्र: परिभाषा

यह अर्थशास्त्र की वह शाखा है, जो व्यक्तिगत इकाइयों, जैसे- उपभोक्ता, उत्पादक, घर तथा फर्म के आर्थिक व्यवहार का अध्ययन करती है तथा यह बताती है कि वे सीमित संसाधनों को आवंटित करने के लिए कैसे निर्णय लेते हैं। यह आपूर्ति और माँग, मूल्य तंत्र एवं विशिष्ट बाजारों के भीतर संसाधनों के आवंटन को व्याख्यायित करती है। व्यष्टि अर्थशास्त्र यह परीक्षण करता है, कि ये निर्णय संसाधनों के उपयोग और वितरण को कैसे प्रभावित करते हैं, जिसका उद्देश्य बाजार में इष्टतम दक्षता एवं समानता प्राप्त करना है।

संसाधनों की कमी, विकल्प की समस्या, असीमित आवश्यकताओं का सिद्धांत और अवसर लागत

1. **संसाधनों की कमी:** भूमि, श्रम और पूँजी जैसे संसाधन सीमित मात्रा में होते हैं तथा सभी मानवीय आवश्यकताओं एवं इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकते। यह कमी अर्थशास्त्र का मूलभूत आधार है, क्योंकि यह संसाधनों के आवंटन को प्राथमिकता देने के लिए विकल्प के चयन की आवश्यकता का निर्माण करती है।

2. **चयन की समस्या:** संसाधनों की कमी को ध्यान में रखते हुए, व्यक्तियों और समाज को यह तय करना होता है, कि संसाधनों का सबसे प्रभावी उपयोग कैसे किया जाए। यह इस प्रकार के प्रश्न उठाता है कि क्या उत्पादन करना है, कैसे उत्पादन करना है, तथा किसके लिए उत्पादन करना है।

उदाहरण: एक फैक्ट्री को कार या साइकिल बनाने में से किसी एक का चयन करना पड़ सकता है, जो माँग और संभावित राजस्व पर निर्भर करता है।

3. **अनंत इच्छाओं का सिद्धांत:** मानव की आवश्यकताएँ और इच्छाएँ असीमित होती हैं, जैसे ही एक इच्छा पूरी होती है, नई इच्छाएँ उत्पन्न हो जाती हैं। यह चक्र सीमित संसाधनों पर दबाव बढ़ा देता है, जिससे व्यक्तियों और समाज को कुछ आवश्यकताओं को प्राथमिकता देनी पड़ती है।

उदाहरण: एक व्यक्ति छुट्टी और एक नई कार दोनों की इच्छा कर सकता है, लेकिन सीमित धनराशि के कारण उसे इनमें से किसी एक का चयन करना होगा।

4. **अवसर लागत:** अवसर लागत उस अगले सर्वोत्तम विकल्प के मूल्य को संदर्भित करती है, जिसे किसी विकल्प के चयन के समय त्याग दिया गया हो। यह उस लाभ को दर्शाती है, जो किसी अन्य विकल्प का चयन करने पर प्राप्त हो सकता था।

उदाहरण: यदि एक फैक्ट्री कार बनाने का चयन करती है, तो साइकिल बेचने से प्राप्त होने वाला राजस्व उसकी अवसर लागत होगा।

आर्थिक गतिविधियाँ

संसाधनों की कमी और समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आर्थिक गतिविधियाँ विभिन्न तरीकों से संगठित की जाती हैं, जो निम्नलिखित तत्वों को शामिल करती हैं:

- बाजार अर्थव्यवस्था:** इसमें कीमतें और उत्पादन, माँग एवं आपूर्ति जैसे कारकों द्वारा निर्धारित होते हैं। निजी क्षेत्र मुख्य रूप से आर्थिक गतिविधियों को संचालित करता है, जिसमें सरकार का हस्तक्षेप न्यूनतम होता है।
उदाहरण: बाजार आधारित अर्थव्यवस्था में ब्रेड की कीमत उपभोक्ता की माँग और उत्पादक की आपूर्ति पर निर्भर करती है।
- निर्देशित अर्थव्यवस्था:** इसमें सरकार अधिकांश आर्थिक निर्णय लेती है, जैसे कौन-सी वस्तुएँ उत्पादन करनी हैं, कैसे उत्पादन करना है तथा उन्हें किसे प्रदान करना है। यह प्रणाली असमानताओं को कम करने का प्रयास करती है, लेकिन इसमें कुशलता की कमी हो सकती है।
उदाहरण: सरकार आवश्यक वस्तुओं जैसे- भोजन और स्वास्थ्य सेवाओं के उत्पादन के लिए संसाधनों का आवंटन कर सकती है।
- मिश्रित अर्थव्यवस्था:** अधिकांश आधुनिक अर्थव्यवस्थाएँ मिश्रित होती हैं, जो बाजार और नियोजित अर्थव्यवस्थाओं की विशेषताओं का मिश्रण हैं। निजी क्षेत्र और सरकार दोनों सामाजिक कल्याण के लक्ष्यों के साथ दक्षता को संतुलित करने के लिए आर्थिक निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

उपभोक्ता व्यवहार का सिद्धांत:

उपभोक्ता व्यवहार का सिद्धांत यह उल्लेख करता है, कि उपभोक्ता बजट प्रतिबंधों के भीतर उपयोगिता को अधिकतम कैसे करते हैं। यह प्राथमिकताओं, उपलब्ध संसाधनों और बाजार की स्थितियों के आधार पर विकल्पों का विश्लेषण करता है।

उपयोगिता

- उपयोगिता उस संतोष को दर्शाती है, जो वस्तुओं या सेवाओं के उपभोग से प्राप्त होता है。
 - कुल उपयोगिता (TU):** सभी उपभोग की हुई इकाइयों से प्राप्त कुल संतोष।
 - सीमांत उपयोगिता (MU):** एक अतिरिक्त इकाई के उपभोग से प्राप्त अतिरिक्त संतोष।

सीमांत उपयोगिता हास का नियम

- जब किसी वस्तु की अधिक इकाइयों का उपभोग किया जाता है, तो प्रत्येक अतिरिक्त इकाई की सीमांत उपयोगिता हास होती जाती है।
उदाहरण: पहली पिज्जा स्लाइस बहुत संतोषजनक होती है, लेकिन बाद की स्लाइसें कम उपयोगी/संतोषजनक लगती हैं।

उपयोगिता विश्लेषण:

1. गणनावाचक उपयोगिता विश्लेषण

- इसके अनुसार उपयोगिता एक मापने योग्य मूल्य है।
- उपयोगिता अधिकतमीकरण:** उपभोक्ता कुल उपयोगिता को अधिकतम करने के लिए अपनी आय को इस प्रकार आवंटित करते हैं, कि वस्तुओं की सीमांत उपयोगिता प्रति रुपए (MU/P) समान हो।

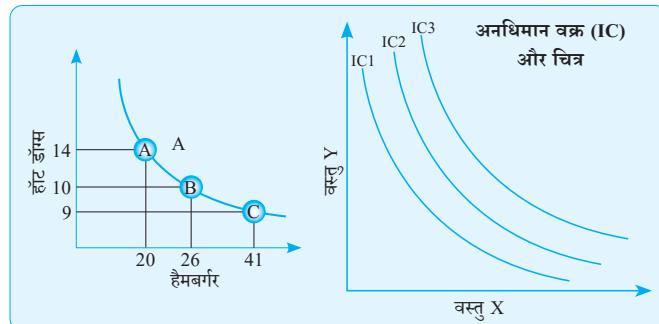
2. क्रमवाचक उपयोगिता विश्लेषण:

- यह मानता है कि उपभोक्ता अपनी प्राथमिकताओं को बिना उचित मूल्य के श्रेणीबद्ध करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप अनधिमान वक्र विश्लेषण होता है।

अनधिमान वक्र और चित्र:

- अनधिमान वक्र:** दो वस्तुओं के उन संयोजनों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो समान प्रतिफल प्रदान करती हैं।
- अनधिमान चित्र:** अनधिमान वक्रों के एक समूह को दिखाता है, प्रत्येक विभिन्न उपयोगिता स्तर का प्रतिनिधित्व करता है। उच्च वक्र अधिक उपयोगिता को दर्शाते हैं।

अनधिमान वक्र को देखिए। यदि आप हॉट डॉग और हैमबर्गर दोनों पसंद करते हैं, तो आप 14 हॉट डॉग तथा 20 हैमबर्गर, 10 हॉट डॉग एवं 26 हैमबर्गर, या 9 हॉट डॉग व 41 हैमबर्गर के संयोजन को खरीदने के प्रति उदासीन हो सकते हैं। इनमें से प्रत्येक संयोजन समान उपयोगिता प्रदान करता है।



- उच्च अनधिमान वक्र:** वक्र के दाईं ओर एक अनधिमान वक्र उपभोक्ता के लिए अधिक वस्तुएँ उपलब्ध होने का संकेत देता है, जिसका अर्थ है अधिक उपयोगिता। यह एक समान प्राथमिकताओं के सिद्धांत पर आधारित है।

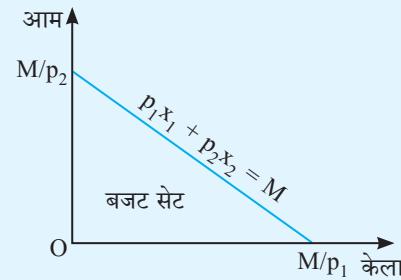
सीमांत प्रतिस्थापन दर (MRS)

- MRS वह दर दर्शाता है, जिस पर एक उपभोक्ता एक वस्तु को दूसरी के लिए परिवर्तित करने को तैयार होता है, जबकि उपयोगिता का स्तर समान रहता है।
- उदाहरण:** केले और सेब - यदि कोई उपभोक्ता 3 सेबों के लिए 6 केले छोड़ने को तैयार है, तो $MRS = 6/3 = -2$ होगा।

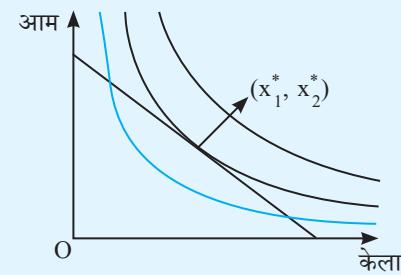
बजट सेट और बजट रेखा

- बजट सेट:** वे सभी संभावित संयोजन, जो एक उपभोक्ता अपनी आय और कीमतों को देखते हुए खरीद सकता है।

- बजट रेखा:** वह रेखा जो दो वस्तुओं के उन संयोजनों को दर्शाती है, जिन्हें एक निश्चित आय से खरीदा जा सकता है। यहाँ p_1 और p_2 क्रमशः आम और केले की प्रति इकाई की कीमत को दर्शाते हैं।



- बजट समुच्चय:** केले की मात्रा क्षैतिज अक्ष तथा आम की मात्रा उर्ध्वाधर अक्ष पर मापी जा रही है। इस आरेख में कोई भी बिन्दु दोनों वस्तुओं के एक बंडल को प्रदर्शित करता है। इस बजट सेट में दर्शायी गई सीधी रेखा के ऊपर या नीचे स्थित सभी बिन्दु आ जाते हैं। इसका समीकरण है: $p_1x_1 + p_2x_2 = M$.

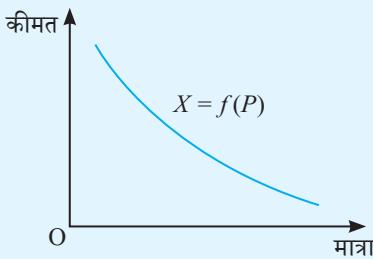


- उपभोक्ता का इष्टतम बिन्दु:** बिन्दु (x_1^*, x_2^*) , जहाँ पर बजट रेखा किसी अनधिमान वक्र पर स्पर्श रेखीय है, उपभोक्ता का इष्टतम बंडल दर्शाती है।
- उपभोक्ता का इष्टतम चयन:** उपभोक्ता के उपभोग का इष्टतम बिन्दु वह होता है, जहाँ बजट रेखा उच्चतम अनधिमान वक्र को स्पर्श करती है।
- यह इसलिए होता है, क्योंकि उपभोक्ता अपनी उपयोगिता को अधिकतम करना चाहता है और बजट में भी रहना चाहता है। इसलिए वह बिन्दु जहाँ बजट रेखा अनधिमान वक्र को स्पर्श करती है, उपभोक्ता का इष्टतम चयन है।
- माँग का नियम:** माँग का नियम कहता है, कि अन्य चीजें समान होने पर किसी वस्तु या सेवा की कीमत बढ़ने पर उपभोक्ता की माँग घटती है और कीमत घटने पर माँग बढ़ती है। **उदाहरण:** यदि स्मार्टफोन की कीमत घटती है, तो उपभोक्ता अधिक स्मार्टफोन खरीदने की क्षमता रखते हैं। इसके विपरीत यदि कीमत बढ़ती है, तो स्मार्टफोन की माँग आमतौर पर घट जाती है। कीमत और माँग की मात्रा के बीच यह विपरीत संबंध अर्थशास्त्र में उपभोक्ता व्यवहार का एक मौलिक सिद्धांत है। हालाँकि, यह नियम केवल सामान्य वस्तुओं पर लागू होता है।

माँग वक्र:

- किसी भी कीमत में परिवर्तन के लिए माँगी गई मात्रा में विपरीत परिवर्तन होता है।

- सामान्यतः माँग वक्र बाएँ से दाएँ नीचे ढलान की ओर बढ़ता है, लेकिन कुछ असामान्य माँग वक्र होते हैं, जो सामान्य नियम का पालन नहीं करते। उनके लिए कीमत में गिरावट से माँग का संकुचन होता है और कीमत में वृद्धि से माँग का विस्तार होता है। इसलिए, ऐसे मामलों में माँग वक्र बाएँ से दाएँ ऊपर की ढलान की ओर होता है।
- सद्वा प्रभाव कुछ भविष्य की घटनाओं की अपेक्षाओं के कारण माँग वक्र को बदल देता है। यदि वस्तु की कीमत बढ़ रही है, तो उपभोक्ता इसे और अधिक खरीदेंगे, क्योंकि उन्हें अपेक्षा है कि यह अभी और बढ़ेगी। उदाहरण: शेरार बाजार।



- माँग वक्र:** किसी उपभोक्ता द्वारा चुनी गई वस्तु की मात्रा और उस वस्तु की कीमत के बीच के संबंध को माँग वक्र कहा जाता है। स्वतंत्र परिवर्तन (कीमत) की माप उर्ध्वस्तर अक्ष पर की जाती है तथा परतंत्र परिवर्तन की माँग समस्तर अक्ष पर की जाती है। माँग वक्र प्रत्येक कीमत पर उपभोक्ता द्वारा माँग की गई वस्तु की मात्रा को दर्शाता है।
- अनधिमान वक्रों** तथा बजट बाध्यताओं से माँग वक्र की व्युत्पत्ति: माँग वक्र को कीमतों में परिवर्तन के साथ इष्टतम उपभोग में होने वाले परिवर्तनों का निरीक्षण करके प्राप्त किया जा सकता है, जो अनधिमान वक्र और बजट बाध्यताओं पर आधारित होता है।

वस्तुओं के प्रकार

- सस्ती या निम्नस्तरीय वस्तुएँ (Inferior Goods):**
 - यह एक आर्थिक शब्द है, जो उस वस्तु का वर्णन करता है जिसकी माँग लोगों की आय बढ़ने पर घट जाती है। जैसे-जैसे आय और अर्थव्यवस्था में सुधार होता है, उपभोक्ता महंगे विकल्प खरीदने लगते हैं तथा ये वस्तुएँ अप्रचलित हो जाती हैं।
 - उदाहरण:** आय में वृद्धि के साथ सस्ते अनाज और खाद्यान्न पदार्थों जैसे-चावल (निम्नस्तरीय वस्तुएँ) को बेहतर गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थों जैसे-अंडे, दूध आदि से प्रतिस्थापित कर दिया जाएगा।
- गिफेन वस्तुएँ (Giffen Goods):**
 - गिफेन वस्तु एक कम आय वाली गैर-विलासिता उत्पाद है, जो मानक आर्थिक और उपभोक्ता माँग के सिद्धांतों को अस्वीकार करती है। गिफेन वस्तुओं की माँग कीमत बढ़ने पर बढ़ती है और कीमत घटने पर घटती है। इसका परिणाम ऊपर की ओर झुका हुआ माँग वक्र होता है, जो माँग के मूलभूत नियमों के विपरीत है, जो नीचे की ओर झुका हुआ माँग वक्र बनाते हैं।

सामान्यतः यह माना जाता है कि गिफेन वस्तुएँ एक प्रकार की निम्नस्तरीय वस्तुएँ होती हैं, जिनका कोई विकल्प नहीं होता। उदाहरण: जब चावल की कीमत बढ़ती है, लोग चावल का उपभोग बनाए रखते हैं और अन्य सब्जियों को छोड़ देते हैं।

ब्रेड, चावल और गेहूँ गिफेन वस्तुएँ हो सकती हैं। ये वस्तुएँ आमतौर पर ऐसी आवश्यकताएँ होती हैं, जिनके लिए समान मूल्य स्तर पर विकल्प कम होते हैं।

स्थानापन्न वस्तुएँ (Substitute Goods):

ये प्रतिस्पर्धात्मक वस्तुओं के समूह होते हैं, जो उपभोक्ताओं के अनुसार एक-दूसरे को बदल सकते हैं।

उदाहरण: यदि चाय महंगी हो जाती है, तो उपभोक्ता कॉफी पी सकते हैं।

पूरक वस्तुएँ (Complementary Goods):

ये उन वस्तुओं के जोड़े होते हैं, जो एक-दूसरे पर निर्भर या संगत होती हैं।

उदाहरण: ब्रेड और जैम, चाय और चीनी आदि।

वेब्लेन प्रभाव (Veblen Effect)

यह उन विलासिता वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च को दर्शाता है, जिनका उपयोग विचित्र शक्ति एवं सामाजिक प्रतिष्ठा को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता है। वेब्लेन वस्तुओं की माँग उनके मूल्य में वृद्धि के साथ बढ़ती है, जैसे- रोलेक्स घड़ी या रोल्स रॉयस कार की माँग उनके उच्च मूल्य और उससे जुड़ी प्रतिष्ठा के कारण होती है।

माँग वक्र में परिवर्तन (Shifts in Demand Curve): आय में परिवर्तन, संबंधित वस्तुओं की कीमतें और प्राथमिकताएँ माँग वक्र को प्रभावित करती हैं। वृद्धि वक्र को दाईं ओर तथा कमी इसे बाईं ओर ले जाती है।

बाजार माँग (Market Demand): किसी वस्तु की सभी उपभोक्ताओं की कुल माँग, जो व्यक्तिगत माँग वक्रों को क्षेत्रिज रूप से जोड़कर प्राप्त की जाती है।

माँग की लोच (Elasticity of Demand):

माँग की लोच किसी वस्तु या सेवा की माँग की मात्रा में उसके मूल्य में परिवर्तन के प्रति संवेदनशीलता को मापने का एक माध्यम है। यह हमें ये समझने में सहायता करता है, कि उपभोक्ता मूल्य परिवर्तनों के प्रति कितने संवेदनशील हैं।

माँग की लोच के प्रकार:

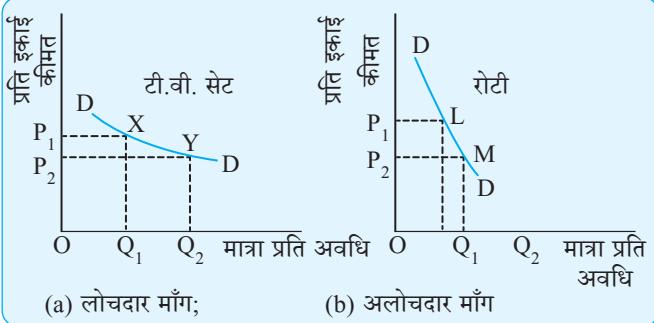
संपूर्ण लोचदार माँग (Perfectly Elastic Demand): मूल्य में बहुत छोटे परिवर्तन पर माँग की मात्रा में अधिक परिवर्तन।

संपूर्ण अलोचदार माँग (Perfectly Inelastic Demand): मूल्य परिवर्तनों के बावजूद माँग की मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं।

अपेक्षाकृत लोचदार माँग (Relatively Elastic Demand): मूल्य में छोटे परिवर्तन पर माँग की मात्रा में बड़ा परिवर्तन।

एकात्मक लोचदार माँग (Unitary Elastic Demand): माँग की मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन, जो मूल्य परिवर्तन के बराबर होता है।

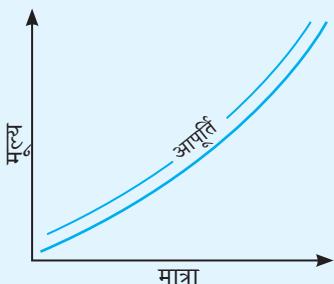
अपेक्षाकृत अलोचदार माँग (Relatively Inelastic Demand): मूल्य में बड़े परिवर्तन पर माँग की मात्रा में छोटा परिवर्तन।



आपूर्ति का नियम (Law of Supply):

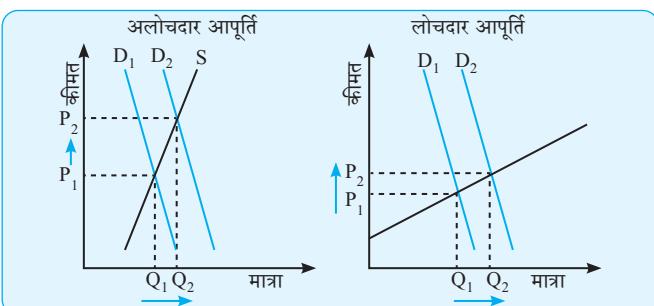
- आपूर्ति के नियम के अनुसार, अन्य सभी चीजें समान होने पर किसी वस्तु या सेवा की कीमत बढ़ने पर उसकी आपूर्ति की मात्रा भी बढ़ती है तथा कीमत कम होने पर आपूर्ति की मात्रा कम होती है।

उदाहरण: यदि कॉफी बीन्स का बाजार मूल्य बढ़ता है, तो किसान अधिक कॉफी बीन्स उगाने के लिए प्रेरित होंगे, जिससे आपूर्ति बढ़ेगी। इसके विपरीत यदि कीमतें घटती हैं, तो किसान कम मुनाफे के कारण कॉफी उत्पादन को कम कर सकते हैं। यह सिद्धांत अर्थशास्त्र में मूल्य और आपूर्ति के बीच प्रत्यक्ष संबंध को दर्शाता है।



आपूर्ति की लोच (Elasticity of Supply):

- आपूर्ति की लोच किसी वस्तु या सेवा की आपूर्ति की मात्रा में उसके मूल्य में परिवर्तन के प्रति संवेदनशीलता को मापती है। यह हमें यह समझाने में मदद करता है, कि मूल्य में उत्तर-चढ़ाव के प्रति उत्पादक अपने उत्पादन स्तरों को कैसे समायोजित करेंगे।



- अपेक्षाकृत लोचदार आपूर्ति (Relatively Elastic Supply): मूल्य परिवर्तन के कारण आपूर्ति की मात्रा में आनुपातिक से अधिक परिवर्तन।

- एकात्मक लोचदार आपूर्ति (Unitary Elastic Supply): आपूर्ति की मात्रा में आनुपातिक परिवर्तन मूल्य परिवर्तन के बराबर होता है।
- अपेक्षाकृत अलोचदार आपूर्ति (Relatively Inelastic Supply): मूल्य परिवर्तन के कारण आपूर्ति की मात्रा में आनुपातिक से कम परिवर्तन।

आय और प्रति लोच (Income and Cross Elasticity):

- आय लोच (Income Elasticity): यह मापता है कि आय में परिवर्तन के प्रति माँग या आपूर्ति की मात्रा कैसे प्रतिक्रिया करती है।
- प्रति लोच (Cross Elasticity): यह मापता है कि एक वस्तु की माँग या आपूर्ति की मात्रा दूसरी वस्तु की कीमत में परिवर्तन के प्रति कैसे प्रतिक्रिया करती है।

उत्पादन, लागत और वृद्धिशील पूँजी उत्पादन अनुपात (ICOR)

- उत्पादन क्रिया (Production Function):
 - परिभाषा: यह आगत कारकों (श्रम और पूँजी) और अधिकतम उत्पादन के बीच संबंध को दर्शाता है।
 - सूत्र: $Q = f(L, K)$, जहाँ Q उत्पादन है, L श्रम है और K पूँजी है।
 - समय अवधि आगत में लचीलापन, लागत और उत्पादन को प्रभावित करती है।
- अल्पकालिक और दीर्घकालिक उत्पादन अवधि (Short Run and Long Run Production Periods):
 - अल्पकाल: कम-से-कम एक आगत (आमतौर पर पूँजी) स्थिर रहता है, जबकि श्रम को समायोजित किया जा सकता है।
 - दीर्घकाल: सभी आगत, जिसमें पूँजी भी शामिल है, परिवर्तनीय होती है, जिससे उत्पादन को स्वतंत्र रूप से बढ़ाने या घटाने की अनुमति मिलती है।

कुल, औसत और सीमांत उत्पाद (Total, Average and Marginal Product):

- कुल उत्पाद (TP): दिए गए आगत सेट के साथ उत्पन्न कुल उत्पादन।
- औसत उत्पाद (AP): प्रति इकाई आगत का उत्पादन, जैसे - श्रम।
- सीमांत उत्पाद (MP): अतिरिक्त आगत इकाई से उत्पन्न अतिरिक्त उत्पादन।

घटते सीमांत उत्पाद का नियम और परिवर्तनशील अनुपात का नियम (Law of Diminishing Marginal Product and Law of Variable Proportions):

- घटते सीमांत उत्पाद का नियम: स्थिर आगत में अधिक परिवर्तनीय आगत जोड़ने से अंततः सीमांत उत्पाद कम हो जाता है।
- परिवर्तनशील अनुपात का नियम: अल्पकाल में एकल आगत को बदलने से तीन चरण उत्पन्न होते हैं: बढ़ता, घटता और नकारात्मक प्रतिफल।

प्रतिफल अनुपात (Returns to Scale):

- परिभाषा: दीर्घकाल में आगत में आनुपातिक वृद्धि और उत्पादन में परिवर्तन के बीच संबंध।

- प्रकार:
 - बढ़ता प्रतिफल (IRS):** आगत से अधिक उत्पादन बढ़ता है।
 - समान प्रतिफल (CRS):** आगत के अनुपात में उत्पादन बढ़ता है।
 - घटता प्रतिफल (DRS):** आगत से कम उत्पादन बढ़ता है।

उत्पादन लागत

अल्पकालिक और दीर्घकालिक लागतें:

- अल्पकालिक लागतें:** इनमें परिवर्तनीय और स्थिर लागत शामिल होती हैं, जहाँ स्थिर पूँजी के कारण लचीलापन सीमित होता है।
- दीर्घकालिक लागतें:** सभी लागतें परिवर्तनीय होती हैं, जो उत्पादन बढ़ने पर प्रति-इकाई लागत को घटाने वाले पैमाने की अर्थव्यवस्थाओं की अनुमति देती हैं।

वृद्धिशील पूँजी उत्पादन अनुपात

(Incremental Capital Output Ratio - ICOR):

- परिभाषा:** ICOR वह अतिरिक्त पूँजी मापता है, जो एक अतिरिक्त उत्पादन इकाई उत्पन्न करने के लिए आवश्यक होती है और यह पूँजी दक्षता को दर्शाता है।
- ICOR = $\Delta K / \Delta Y$,** जहाँ ΔK पूँजी में वृद्धि है और ΔY उत्पादन में वृद्धि है।
- महत्व:** कम ICOR अधिक दक्षता को इंगित करता है, अर्थात् विकास के लिए कम पूँजी की आवश्यकता। यह आर्थिक नियोजन के लिए महत्वपूर्ण है।
 - भारत:** श्रम-प्रधान उद्योगों और धीमी पूँजी उत्पादकता के कारण ICOR अपेक्षाकृत अधिक है।
 - चीन:** कुशल पूँजी आवंटन और उच्च बुनियादी ढाँचा निवेश से कम ICOR।
 - अमेरिका:** उन्नत प्रौद्योगिकी और उच्च पूँजी निवेश के संतुलन से मध्यम ICOR बनाए रखता है।

आर्थिक क्षेत्रों में सीमांत उत्पाद और ICOR का महत्व

- कृषि:** उत्पादकता बढ़ाने के लिए तकनीकी निवेश में इष्टतम पूँजी निवेश निर्धारित करने में ICOR मदद करता है।
- निर्माण:** उच्च सीमांत उत्पाद और कम ICOR पूँजी-प्रधान क्षेत्रों में कंपनियों को प्रभावी रूप से विस्तार करने की अनुमति देते हैं।
- सेवा क्षेत्र:** तकनीकी निवेश से दक्षता में सुधार उत्पादकता को बढ़ाता है और ICOR को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

फर्म का सिद्धांत (Theory of Firm):

फर्म का सिद्धांत यह वर्णन करता है, कि व्यवसाय उत्पादन स्तर और मूल्य निर्धारण के नियंत्रण कैसे लेते हैं, जिससे अधिकतम लाभ अर्जित किया जा सके। यह माना जाता है कि फर्म लाभ अधिकतमीकरण के उद्देश्य से संचालित होती हैं और उत्पादन तब तक करती हैं जब तक सीमांत लागत (MC) सीमांत राजस्व (MR) के बराबर न हो जाए। यह सिद्धांत लागत संरचनाओं, उत्पादन क्रियाओं और राजस्व विश्लेषण जैसे कारकों पर विचार करता है। यह बताता है कि व्यक्तिगत फर्म आपूर्ति वक्र कैसे उत्पन्न होते हैं तथा फर्म बाजार मूल्य में परिवर्तनों पर कैसे प्रतिक्रिया देती है।

पूर्ण प्रतिस्पर्धा (Perfect Competition):

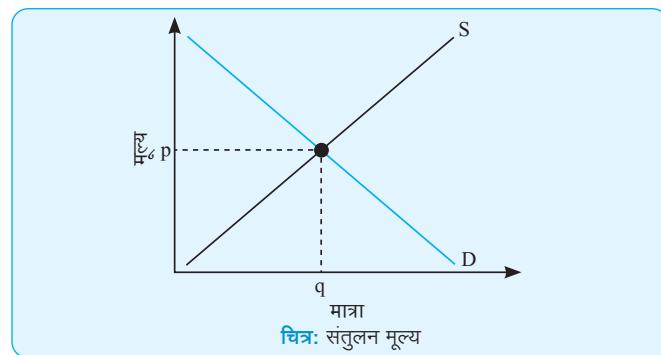
पूर्ण प्रतिस्पर्धात्मक बाजार की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- अनेक क्रेता और विक्रेता:** कोई भी एक प्रतिभागी बाजार मूल्य को प्रभावित नहीं कर सकता।
- समान उत्पाद:** वस्तुएँ सभी विक्रेताओं के लिए समान होती हैं, जिससे उपभोक्ता फर्मों के बीच भेदभाव नहीं करते।
- मुक्त प्रवेश और निकास:** फर्म स्वतंत्र रूप से बाजार में प्रवेश कर सकती हैं या इसे छोड़ सकती हैं, जिससे दीर्घकालिक संतुलन बना रहता है।
- पूर्ण जानकारी:** सभी प्रतिभागी कीमतों और उत्पाद की गुणवत्ता के बारे में पूरी तरह से सूचित होते हैं। उपर्युक्त स्थिति में फर्म 'मूल्य ग्रहणकर्ता' होती है, अर्थात् उन्हें प्रचलित बाजार मूल्य को स्वीकार करना होता है।

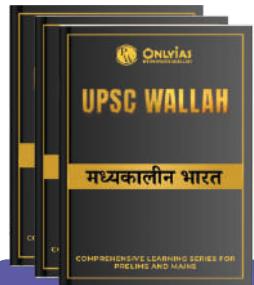
अन्य प्रतिस्पर्धात्मक संरचनाएँ

पूर्ण प्रतिस्पर्धा के विपरीत अन्य प्रतिस्पर्धात्मक संरचनाएँ निम्नलिखित हैं:

- एकाधिकार (Monopoly):** एकमात्र विक्रेता, जिसके पास कोई निकट प्रतिस्थापन नहीं होता, बाजार को नियंत्रित करता है और मूल्य व मात्रा को प्रभावित करता है।
- अल्पाधिकार (Oligopoly):** कुछ बड़ी फर्मों का प्रभुत्व, जिससे मूल्य निर्धारण में परस्पर निर्भरता और संभावित साँठ-गाँठ होती है।
- एकाधिकार प्रतिस्पर्धा (Monopolistic Competition):** कई फर्में भिन्न उत्पाद बेचती हैं, जिससे उन्हें कुछ सीमा तक मूल्य निर्धारण का अधिकार मिलता है। प्रत्येक संरचना मूल्य निर्धारण, उत्पादन और बाजार दक्षता को अलग-अलग तरीकों से प्रभावित करती है।
- बाजार आपूर्ति और आपूर्ति वक्र (Market Supply and Supply Curve):** बाजार आपूर्ति वक्र यह दर्शाता है, कि विभिन्न कीमतों पर सभी फर्में कितनी मात्रा में वस्तुओं की आपूर्ति करने हेतु तैयार हैं। इसे व्यक्तिगत फर्मों के आपूर्ति वक्रों को जोड़कर प्राप्त किया जाता है। सामान्यतः बढ़ती सीमांत लागत के कारण आपूर्ति वक्र ऊपर की ओर झुकता है, जो यह दर्शाता है कि उच्च कीमतों फर्मों को अधिक आपूर्ति के लिए प्रोत्साहित करती हैं।
- बाजार संतुलन (Market Equilibrium):** बाजार संतुलन तब होता है, जब माँग की मात्रा आपूर्ति की मात्रा के बराबर होती है, जिससे एक स्थिर मूल्य प्राप्त होता है जहाँ खरीदारों और विक्रेताओं के उद्देश्य एकसमान होते हैं। इस मूल्य पर, जब तक कोई बाह्य कारक माँग या आपूर्ति को परिवर्तित नहीं करता, तब तक कोई परिवर्तन नहीं होता।

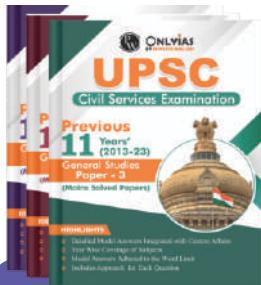


अन्य पुस्तकें एवं कार्यक्रम



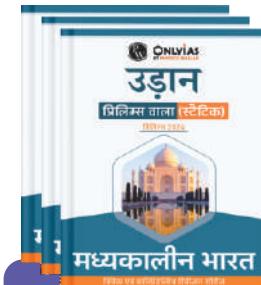
BOOKS

व्यापक कवरेज



BOOKS

पिछले 11 वर्षों के हल प्रश्न-पत्र (PYQs) (प्रारंभिक+ मुख्य परीक्षा)



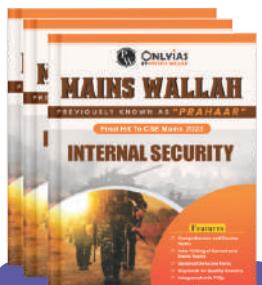
FREE MATERIAL

उडान (प्रिलिम्स स्टैटिक रिवीज़न)



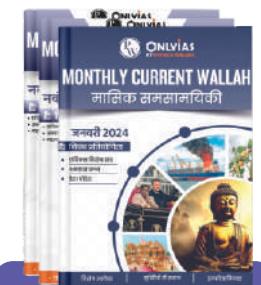
FREE MATERIAL

उडान प्लस 500 (प्रिलिम्स समसामयिकी रिवीज़न)



FREE MATERIAL

मेन्स रिवीज़न



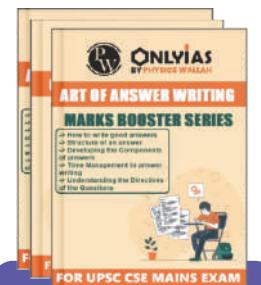
CURRENT AFFAIRS

मासिक समसामयिकी



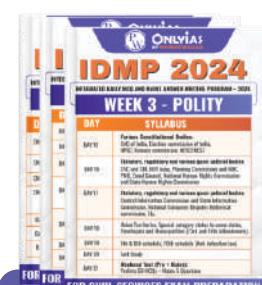
CURRENT AFFAIRS

मासिक संपादकीय संकलन



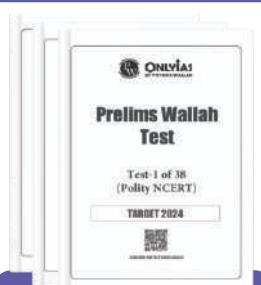
FREE MATERIAL

विविक रिवीज़न बुकलेट



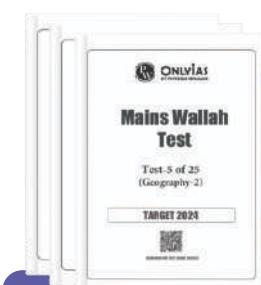
TEST SERIES

IDMP ईयर लॉन्ग टेस्ट



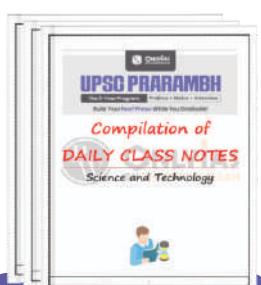
TEST SERIES

35+ प्रिलिम्स टेस्ट



TEST SERIES

25+ मेन्स टेस्ट



CLASSROOM CONTENT

डेली क्लास नोट्स और अभ्यास प्रश्न

— All Content Available in **Hindi and English** —

📍 Karol Bagh, Mukherjee Nagar, Prayagraj, Lucknow, Patna

₹ 299/-



ISBN 978-93-6897-164-1
9 789368 971641
d3c112fa-cf00-4296-925e-9e3d4aebd280